HIS HOLINESS
MAHARISHI MAHESH YOGI JI

E-Gyan

अंक – इक्किसवाँ Volume -21
14 March 2011, Monday

Monthly Digital News Letter of Maharishi Organizations - India
महर्षि संस्थान भारत का मासिक सूचना पत्र
महर्षि संवत्सर – ५६ विक्रम संवत्सर – २०६७ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ९, सोमवार १४, मार्च २०११
E-mail - egyan@mahaemail.com and egyanmonthly@gmail.com Web site - www.e-gyan.net

महर्षि विद्या मन्दिर के शिक्षकों के लिये महर्षि जी का संदेश

''हर एक शिक्षक के लिए चाहे वो जिस कक्षा के शिक्षक हों, चेतना का ज्ञान बहुत आवश्यक है। ज्ञान चेतना का विषय है जैसे उपजाऊ भूमि में फसल अच्छी होती है, वैसे ही सतोगुणी चेतना में ज्ञान पूरा जागृत रहता है और ज्ञान में अनन्त क्रियाशक्ति होती है। जितनी ज्यादा सतोगुणी चेतना होगी उतनी ही ज्यादा ज्ञान की क्रियाशक्ति जागृत रहेगी। इसीलिए जैसे बालकों को ज्ञान देने का विधान है, वैसे ही उनको अपनी चेतना में सतोगुण जगाने का भी विधान है। चेतना में सतोगुण जागता है ध्यान से। भावतीत ध्यान एक ऐसी सरल एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें मन अपने आप धीमा होता–होता अपने आप में आ जाता है जिसे भावातीत चेतना कहते हैं । मंत्र लेते है तो मंत्र का भाव सूक्ष्म होता–होता फिर सूक्ष्मातीत क्षेत्र को पार करके, भाव के अतीत जा के अपनी शुद्ध चेतना में आ जाता है। चेतना जितनी शुद्ध होगी उतनी ही पवित्र होगी, सतोगुणी होगी। उस चेतना में ज्ञान ज्यादा जागृत रहेगा।

अपनी कहावत है ''सत्य मेव जयते''। जीवन में जय पाने के लिए और जीवन के हर एक क्षेत्र में विजय पाने के लिए चेतना जितनी अधिक सतोगुणी होगी उतनी अधिक ध्यान की क्रियाशक्ति चेतना में जागृत हो के, काम करने का विधान है। इसको कहते हैं ''योगस्थः कुरू कर्माणि''। पतन्जली अष्टांग योग के आठों अंग भावतीत ध्यान में आ जाते हैं, तो मन की बिखरी हुई प्रवृत्तियां स्वाभाविक रूप से बैठ जाती हैं। वह आत्म चेतना होती है – भावातीत चेतना होती है। भगवद् गीता के दूसरे अध्याय में 45वां श्लोक एवं उवके बाद के दो–चार श्लोकों में भावातीत ध्यान का वर्णन है। सब बालकों को भावातीत ध्यान करा के उनकी चेतना में सतोगुण बढ़ा के ज्यादा–ज्यादा ज्ञान देने का विधान है।

शिक्षकों के यूनियन होते हैं, उसमें मत जाना, क्योंकि शिक्षकों के यूनियन बनने लगे भारत में तो कालख आ गयी अपने देश की शिक्षा पद्धति में।

हमारा विद्या मंदिर खोलने का विचार इसलिए हुआ है कि अब भारत में शिक्षा पद्धति भारतीय नहीं रही। विलायती प्रभाव से भारतीय ज्ञान–विज्ञान भूमिल पड़ गया। अज्ञान के बादल आये और ज्ञान पूरा ढक गया एवं हर प्रकार की समस्याएं देश तथा व्यक्ति के जीवन में आने लगी। भारत, भारत नहीं रहा, प्रतिभारत देश नहीं रहा। हमने सोचा अब इसको पलटना चाहिए। इसको पलटने के लिए वर्तमान भारत की शिक्षा में वैदिक सिद्धांतों का प्रवेश दे रहे हैं।

आप लोग महर्षि विद्या मंदिरों में शिक्षक के रूप में जा रहे हैं इसलिए अपने को दूसरे विद्यालयों के शिक्षकों के साथ मत मिलाना। शिक्षकों के यूनियन होते हैं, उसमें मत जाना, क्योंकि शिक्षकों के यूनियन बनने लगे भारत में तो कालख आ गयी अपने देश की शिक्षा पद्धति में। इसलिए हम कहते

हैं उसमें मत जाना चाहे वह कानूनी ही क्यों न हो। हमारा विद्यालय खोलने का उद्देश्य है, हर एक विद्यार्थी की चेतना में सतोगुण जगाना जो पढ़ाई होगी उसमें संस्कृत की प्रधानता होगी। संस्कृत भाषा 'संस्कृत' करने वाली है। संस्कृत करना माने ''पवित्री करण'' करना, चेतना में जो अज्ञान के बादल रहते हैं उनको हटाना। जो पवित्रीकरण करने वाली भाषा है वो संस्कृत भाषा है और वो वेद से निकली है आप लोगों के लिए वेद विज्ञान पुस्तकें भेज देंगे। सिद्धान्त समझ में आ जाएगा कि क्यों शिक्षकों और विद्यार्थियों को ध्यान करना जरूरी है। ध्यान, ज्ञान और अनन्त क्रिया शक्ति का आपसी संबंध भी पता चल जायेगा।

विद्या मंदिरों के शिक्षक अपने जीवन को आदर्श भारतीय जीवन मानेंगे और वैसे ही व्यवहार करेंगे। ऐसा नहीं कि विद्यालय जाकर धोती पहन लेंगे और शाम को सड़क पर कोट–पैन्ट पहनकर घूमेंगे। भारतीयता को अपने जीवन में व्यवहारिक बनाएंगे और वही उदाहरण विद्यार्थियों के सामने रखेंगे। अगर अंग्रेजी के शिक्षक हैं तो कोई जरूरी नहीं है कि कोट–पैन्ट पहन कर अंग्रेजी बोलें। धोती, कुर्ता, टोपी पहन कर अंग्रेजी बोलें। खाली भाषा सुनाओं। रामायण, भगवद्गीता, महाभारत का ज्ञान हर एक शिक्षक को रहना चाहिए।

यदि किसी शिक्षक ने महाभारत, रामायण और गीता के आध्यात्मिक विकास, आधिदैविक विकास, आधिभौतिक विकास के सिद्धांतों को नहीं समझा है तो उनकी चेतना में सतोगुण बराबर नहीं बना रहेगा। उनके विद्यार्थियों की चेतना में भी सतोगुण नहीं आएगा। आप लोगों की व्यवसायिक जिम्मेवारी है, अपना प्रोफेशनल एटिकेट है कि आप की चेतना में सतोगुण हमेशा बना रहे। विद्या मंदिर के शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में, उनकी वेश–भूषा में, उनकी वाणी में, उनके व्यवहार में सतोगुण झलकना चाहिए। अपने को शिक्षकों की बाजार में हीरे मोती के दुकान वाला समझना चाहिये, गल्ले की दुकान वाला नहीं।

दूसरे विद्यालयों के शिक्षकों के साथ जब मिलो, उनको कुछ वैदिक ज्ञान बताओं, भारतीय चेतना का ज्ञान, विज्ञान है, उसके संबंध में बात करो। उनको भावातीत ध्यान सिखाने की कोशिश करो और अपने समाज में छुट्टी के दिनों में भाषण दिया करो। सब लोगों को इकट्ठा करके बताया करो जीवन में आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक विकास करने के लिए वेद विज्ञान विद्या कितना आवश्यक है। आप सब अच्छी तरह ध्यान किया करो, और रामायण, गीता और महाभारत दो तीन बार पढ़ लो। इसके पढ़ने से आप में 'पूर्ण चेतना' जागृत होगी । ऋषि, देवता, एवं छन्द की चेतना होगी। ऋषि, देवता, एवं छन्द की संहिता सभी विद्यार्थी की चेतना में जगाना है। पूरा ध्यान एवं ज्ञान एक साथ चेतना में जागृत रहे तो पूर्ण पुरूष का निर्माण होगा। समाज भारतीय समाज होगा। अपने को विद्या मंदिर के शिक्षक के रूप में ''पूर्ण पुरूष निर्माता'' ऐसा मानना चाहिए। विद्या मंदिर का प्रत्येक शिक्षक ''पूर्ण पुरूष निर्माता'' है। सब के सब विद्या मंदिरों के शिक्षकों को आज यह उपाधि मिली है जो उनके गुण का वर्णन करती है। ज्ञानी, प्रबुद्ध एवं सतोगुणी शिक्षक के सामने बच्चों का जो चरित्र निर्माण होता है वह भी सतोगुणी होता है। हर एक विद्यार्थी के भीतर की मनोवृत्ति में प्रवेश कर के, ध्यान सिखा के उसको शिक्षा दो। आप लोगों का कर्तव्य होगा–अपने पास पड़ोस के लोगों में, अपने नगर की जनता में, विद्या मंदिर की शिक्षा का महत्व समझाना।

जय गुरु देव

"ई–ज्ञान"
सम्पादक मण्डल

महर्षि संदेश

ज्ञान एक संहिता है। संहिता माने इकट्ठापन, किसका इकट्ठापन? ज्ञाता, ज्ञान ओर ज्ञेय का इकट्ठापन। ऋषि, देवता, छन्द का इकट्ठापन। ऋषि, देवता, छन्द क्या है? चेतना के तीन गुण हैं। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय ये तीन गुण चेतना के हैं और चेतना अद्वैत है।

ये प्रकृति के जो नियम हैं, उन नियमों का सारा समन्वय शुद्ध चेतना में है और वो शुद्ध चेतना भावातीत चेतना है, वह यौगिक चेतना है, वह कैवल्य की चेतना है। एक अखण्ड चेतना सागर वेद रूप में लहराया है औरएक अखण्ड चेतना सागर विश्व रूप में लहराया है। चेतना की अपनी स्वयं की सत्ता में ऋषि, देवता, छन्द की तीन सत्तायें और इन तीन सत्ताओं का परस्पर समबन्ध, क्रियाशक्ति है वो ऋषि, देवता, छन्द के कारण है। चेतना के स्पन्दनों में जो शब्द है, जो श्रुति है, उस श्रुति में जो अर्थ भरा है, वह अर्थ, पदार्थ रूप में विकसित होता है और पदार्थ सारे विश्व का निर्माण करता है, संचालन करता है। तो सारे विश्व ब्रह्माण्ड की अनन्त अनेकताओं का संचालन उस चेतना के द्वारा होता है जो चेतना अपने आप में भावातीत है। सारी सृष्टि का एक बिखरा हुआ रूप है और सारी सृष्टि का सिमटा हुआ रूप है। एक सम्मिलित रूप है।

जैसे समुद्र के ऊपर लहरें होती हैं, जैसे–जैसे भीतर जायें तो लहरें शांत होती है वैसे ही चेतना सागर की परम शांति भावातीत सत्ता में है जहां भाव का स्पन्दन नहीं होता। भावों की सत्ता तो भावातीत चेतना है, जो अपने आपमें पूर्ण जागृत है। उसकी अनुभूति भावतीत ध्यान से होगी और उस भावातीत शुद्ध चेतना के जो स्पन्दन है, उसमें जो शब्द है उस शब्द से पदार्थ की उत्पत्ति हुई है। सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। पूरे विश्व के मूल में वेद का स्पन्दन है और वो चेतना के स्पन्दन है और उसके मूल में चेतना की निष्पंद सत्ता अपनी आत्म चेतना है। जितना ज्ञान का प्रसार है वह अपने आत्मा का ही प्रसार है।

वाणी और वेद आत्म सत्ता का ही स्पन्दन है और विश्व जो है, वह वेद का स्पन्दन है। यही पूर्ण ज्ञान है और यह ज्ञान चेतना का ज्ञान है। जितना जड़ पदार्थ है वह सब चेतन सत्ता की ही अभिव्यक्ति है।

महर्षि विद्या मंदिर की 'महर्षि विद्या' वह विद्या है जो सिद्धान्त और प्रयोग, सांइस और टेक्नोलॉजी दोनों को इकट्ठा एक साथ चेतना में जागृत करती है। यह महर्षि विद्या है। महर्षि विद्या वह है जो विज्ञान के सहारे समूची चेतना को वाणी रूप में और पदार्थ रूप में, विश्व रूप में और व्यवहार रूप में परिणीत करती है। महर्षि विद्या मंदिर के शिक्षकों में यह चेतना जागृत है और उनमें विद्यार्थियों में पूर्ण चेतना जागृत कराने की योग्यता है। प्रत्येक विद्यार्थी की आत्म चेतना में पूरा का पूरा वेद विज्ञान और वेद विज्ञान मे पूरा का पूरा विश्व विज्ञान निहित है। ज्ञान के क्षेत्र में, जितने ये अलग–अलग पढ़ाने के विषय है वो सब के सब चेतना की स्पन्दनों में है, वाणी के स्पन्दनों में हैं। तो वाणी को चेतना का स्पन्दन बता कर और चेतना को हर एक की आत्मा समझा कर अपने विद्यार्थियों

की बुद्धि में जागृत करेंगे कि हम पूर्ण ज्ञानवान हैं। स्वभाव से हम गलती नहीं करते। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करते और प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करेंगे तो सतोगुणी होंगे, ''सत्य मेव जयते'' होंगे। हम सदा विजयी होंगे, समस्यायें नही आयेंगी। इसके लिए अपने को पूरा मन लगा के समाज में यह जागृति देनी है और विद्यार्थियों को तो पढ़ाना ही है। यह तब होगा, जब आप एक शिक्षक के रूप में ज्ञान में आनन्द लेंगे।

अपना धर्म है, ज्ञान देना। ज्ञान देने में हम रूचि लें। हमारा जो व्यवसाय है वह दूसरों को ज्ञानी बनाने में है। ऐसा नहीं है कि स्कूल में सुबह शिक्षण हो और शाम को दूसरा रोजगार चल रहा हो। हमें जो कुछ भी करना है वह ज्ञान प्रदान करने में करना है। ज्ञान दूसरे को देने में आनन्द का अनुभव करना है। अपनी चेतना में जो ज्ञान की सत्ता है यदि हम उसे जागृत रखेंगे तो हम अपने जीवन में गलतियां नहीं करेंगे। समस्यायें नहीं होगी तो हमारा समाज एक पूर्ण समाज होगा। अभी भी हम अपनी विद्या को पूर्ण मानते हैं, लेकिन विदेशी संस्कृति के प्रभाव से भारतीयों का खान–पान वेश–भूषा सभी पर प्रभाव पड़ा है। ऐसे कितने लोग भारत में हैं जो जानते हैं कि आज पूर्णिमा है या अमावस्या है। अभी भी हमारे यहां त्यौहार की परम्परा बनी हुई है और हमें इस परम्परा को बना कर रखना है लेकिन कितने हैं जो इस परम्परा को निभाते हैं। हमें अपने छोटे बच्चों को संस्कार के रूप में यह देना है इसी में जीवन की पूर्णता है।

जय गुरु देव

"ई–ज्ञान"
सम्पादक मण्डल

PHYSICS OF ONE PERCENT EFFECT

Maj. Gen. Dr. Kulwant Singh (Retd.)
Minister of Invincible Defence-Maharishi Global Country of World Peace
Director General-Maharishi Invincible Defence Programme-India

Maharishi Ji introduced large scale TM programme in many cities of America in 1974. While studying the effects of group meditation, it was noticed that when the number of people in a city practicing TM reached 1% of population, the negative tendencies, such as, traffic accidents, violent incidents, crime, fire accidents and so on began to decline. It was further noticed that when advance practice of TM – Sidhi and Yogic Flying was practiced, the number required to bring positive trends was much less - only square root of 1% of the population.

Principle of 1% coherent elements, making the entire system coherent is well known in physics. In the medical field, this phenomenon is used in the Pace maker to regulate the heart functioning. Pace maker coherent cells that compose about 1% of an organism, assure the coherent contraction and relaxation of heart muscle.

The functioning of laser light is a good example of 1% effect. When 1% photons become coherent in a laser, phase transition takes place, making the remaining 99% photons coherent, and produce laser light; being coherent, laser light is much more powerful than ordinary random incoherent light. This phenomenon of compelling incoherent elements to coherent happens because physics prefers orderliness than disorderliness. In ordinary system, the light is emitted in different directions at various frequencies, creating what physics calls it 'incoherent light', all mixed up. In laser, however, a type of collective behavior emerges that is distinguish by its orderliness; the atoms are perfectly correlated with each other and no longer act independently.

Again there is no mystery in the phenomenon of the square root of 1%.Three incoherent speakers of 100 watts power will collectively produce 100+100+100=300 watts of sound. If the speakers were coherent, that is with identical wave length and frequencies - in fact total symmetry in all parameters, the sound produced will be of the power of square the number of speakers, ie, 300x300=90000 watts. This happens due to well-known principle in physics -"Collective Interference"

Similarly, small number of coherent TM practitioners can produce very strong coherence in the surrounding area and positively affect the environment. Maharishi Ji used this very principle in bringing global peace and Invincibility, (using Yogic Flyers with optimum brain coherence), by now well known as Invincible Defence Technology (ITD).The most striking example amongst many is the study of using Yogic Flyers to create coherence in war zone in the Middle East and to record the effects of Lebanon war. The results were striking – 70% reduction in war deaths, 68% reduction in war injuries and 48% reduction in the overall level of conflict.

JAI GURU DEV

ACHIEVEMENTS OF MVM STUDENTS IN DIFFERENT COMPETITIVE EXAMS/ACTIVITIES

MVM Shilpukhuri Guwahati

* Angana Bhattacharya of class XI got the opportunity to visit NEIST (North East Institute of Science and Technology) Jorhat, Assam to attend a CSIR (Centre for Scientific and Industrial Research) Science seminar for her outstanding result in class X board examination. Total 150 students who had topped in class 10th board examination from CBSE, State Board and ICSE from all the seven states of north east were invited. The programme was organised from 14th to 18th December 2010.

* Suvak Raj Nath of class III participated in 21st Children Adventure orientation Camp organised by Assam Mountaineering Association at R. K. Bhuyan Memorial Rock Field Guwahati from 24th to 26th December 2010.

* Namrata Khound of class V got 3rd position in 1st National Painting Competition 2011 by the Ministry of Water Resource, Govt. of India on 21st January 2011. The theme of the competition was Water in Environment.

Suvak Raj

Namrata Khound

MVM-IV Guwahati

Udit Kamal Sharma and Bhaskar Das, students of MVM-IV Guwahati at present studying in class - XI after passing - X CBSE final examination, 2010 from the same school as topper has witnessed “Republic Day Parade, 2011” in New Delhi from “Prime Minister’s box” at Raj Path. It is also to be highlighted that HRD Ministry has selected above two students along with total 100 meritorious students from Universities/Schools toppers obtaining information directly from CBSE, New Delhi

Udit Kamal

Bhaskar Das

विषय की जानकारी देगें : ग्रह

ज्योतिष चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्।।

ज्योतिष की उपयोगिता इन दिनों जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ रही है। प्रतिदिन होने वाले शुभाशुभ मुहुर्त, यात्रा आदि की जानकारी ज्योतिष के द्वारा प्राप्त होती है अतः वेदांग में इसे ''वेद चक्षुः'' के नाम से जाता है।

भारतीय ज्योतिष जीवन के गूढ़ अदृश्य प्रभावों को उद्घाटित करता है जिसका परिणाम देखने को मिलता है। जीवन विविध आयामी है। सभी क्षेत्रों में यह देखा गया है कि कार्य के अनुरूप परिणाम कभी मिलता है कभी नहीं मिलता है। इसी प्रतिकूलता को साम्यावस्था में लाकर सही दिशा देने का प्रयास ज्योतिष शास्त्र करता है।

मनुष्य जन्म के समय ग्रहों की पड़ने वाली रश्मियों से जीवन पर्यन्त प्रभावित होता है। जिन ग्रहों के प्रभाव से मानव प्रभावित होता है उन ग्रहों के रूप रंग और गुण के अनुसार ही वह विकसित होता रहता है एवं उसकी विचारधारा भी सूर्यादि ग्रह (गोचर) के प्रभाव से परिवर्तित होती रहती है।

आज भौतिक जीवन के संक्षिप्त जीवन में मानव अधिक से अधिक कार्य करने तथा अपने को सुव्यवस्थित करने में लगा रहता है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए व्यक्ति को अनुकूल शिक्षा तथा विषय चयन करने की आवश्यकता पड़ती है। मुख्यरूप से यह देखा गया है कि जन्मकुण्डली में शिक्षा का योग बना है, जातक स्नातकोत्तर भी कर लिया है परन्तु वह कार्य नही कर रहा है जिसकी उसने शिक्षा प्राप्त की है। इसका कारण यह है कि जातक की शिक्षा जिस क्षेत्र में (अध्यापन, इंजीनियर, डाक्टर, व्यापारी व सेक्रेटरी) होना चाहिए उस क्षेत्र में नहीं हुई है। अपितु जातक अपनी कुण्डली एवं ग्रह गोचर के अनुसार विषय का चयन कर शिक्षा प्राप्त करे तो शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही योग्यता प्राप्त कर व्यवसाय, नौकरी, नेता व अन्य सम्मानित पद प्राप्त कर सकते हैं।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा हैः–

ग्रह भेषज जल पवन पट पाई कुयोग।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षन लोग।।

जिस प्रकार औषधियां अनुकूल अनुपान पाकर अधिक सक्रिय व उपयोगी सिद्ध होती है उसी प्रकार जन्मकुण्डली में पड़े हुए ग्रह भी चन्द्रादियोग, केन्द्रादियोग आदि योगों को प्राप्त होकर व्यक्ति को बुद्धि, ज्ञान, मान व सम्मान आदि शुभ फल प्रदान करते हैं।

सुनील कुमार पाण्डेय
(ज्योतिषाचार्य)

महर्षि ज्योतिष की दृष्टि में मार्च माह

पण्डित हरिशरण मिश्र, (ज्योतिषाचार्य)

मार्च माह, फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वादशी मंगलवार से प्रारम्भ होकर चैत्र कृष्ण पक्ष द्वादशी गुरुवार पर्यन्त तक रहेगा।

इस माह में पड़ने वाले व्रत एवं त्यौहार इस प्रकार हैं।

श्री महाशिव रात्रि व्रत (02 मार्च)– यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को किया जाता है। यह भगवान शिव की आराधना का अत्यंत महत्वपूर्ण व्रत है। यह व्रत समस्त पाप समूहों का नाश करके अक्षय पुण्य प्रदान करता है। चतुर्दशी तिथि के स्वामी भगवान शिव हैं और रात्रि में विशेष शिव पूजन का विधान इस व्रत में है, इस प्रकार इस व्रत का नाम शिवरात्रि हो गया है। ईशान संहिता में उल्लेख आया है कि द्वादश ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव इसी दिन हुआ था। तभी से इसे महाशिवरात्रि व्रत कहा जाने लगा है।

सद् गृहस्थ परिवार को भगवान शिव की आराधना अवश्य करनी चाहिये।

यथा–इच्छित फल विनु शिव अवराधे।
मिलिहि न कोटि जोग जप साधे।।

भगवान शिव से बढ़कर कोई परम तत्व नहीं है, अतः इसदिन जो गृहस्थ भगवान शिव का पूजन नहीं करता वह सहस्र जन्मों तक अनेक योनियों में भ्रमण करता रहता है, उसे मोक्ष सुलभ नहीं होता।

स्कन्द पुराण का कथन है कि शिव रात्रि में भगवान शिव का पूजन, जागरण और उपवास करने वाला मनुष्य पुनः गर्भ में नहीं आता है, अर्थात उसका पुनः जन्म नहीं होता है। अस्तु अपनी वैभव सम्पदा के अनुसार गृहस्थों को भगवान शिव का पूजन, अभिषेक तथा जागरण और उपवास रखना चाहिये। और अपने अभीष्ट मनोरथ की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिये।

फाल्गुन कृष्ण अमावस्या (04 मार्च)– फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को रूद्र, अग्नि और ब्राह्मणों का पूजन करके उन्हें उड़द, दही और पूड़ी आदि का नैवेद्य अर्पण करें और स्वयं को भी इन्हीं पदार्थों का एक बार भोजन करना चाहिये। इस अमावस्या के दिन युग का प्रारम्भ होने से इस दिन पित्रादिको का अपिण्ड श्राद्ध करना चाहिये।

आमलकी एकादशी (16 मार्च)– फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी आमलकी एकादशी कहलाती है, क्योंकि आंवले के वृक्ष में भगवान का निवास होने के कारण उसी वृक्ष के नीचे भगवान का पूजन किया जाता है, अतः यह एकादशी आमलकी एकादशी कही जाती है।

इस दिन व्रत रखकर आँवले का उबटन, आँवले मिश्रित जल से स्नान, आँवला पूजन, आँवला मिश्रित भोजन तथा आँवले का दान करना चाहिये।

होलिका दहन (19 मार्च)– फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को भद्रा रहित समय में रात्रि को होलिका दहन किया जाता है। जिस प्रकार श्रावणी को ऋषि पूजन तथा दीपावली को लक्ष्मी पूजनोपरान्त भोजन किया जाता है, उसी प्रकार होलिका के व्रत वाले होलिका दहन की ज्वाला देखकर ही भोजन करते हैं।

इस दिन मध्यान्ह के बाद नाना प्रकार के व्यंजनों के साथ होलिका पूजन किया जाता है फिर रात्रि में

होली जलाकर अबीर–गुलाल के साथ होली के गीत–संगीत का आयोजन किया जाता है।

(मार्च माह में पड़ने वाले व्रत, पर्व एवं त्यौहारों की सूची)

क्रमांक	व्रत–पर्व–त्यौहार	मास	पक्ष	तिथि	दिनाँक
1.	प्रदोष व्रत	फाल्गुन	कृष्ण	त्रयोदशी	02.03.2011
2.	श्री महा शिवरात्रि व्रत	फाल्गुन	कृष्ण	त्रयोदशी	02.03.2011
3.	श्री वैद्यनाथ जयन्ती	फाल्गुन	कृष्ण	त्रयोदशी	02.03.2011
4.	फाल्गुन अमावस्या	फाल्गुन	कृष्ण	अमावस्या	04.03.2011
5.	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी	फाल्गुन	शुक्ल	तृतीया	08.03.2011
6.	होलाष्टकारम्भ	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	12.03.2011
7.	मीन का सूर्य (खर मास का आरंभ)	फाल्गुन	शुक्ल	दसमी	15.03.2011
8.	रंग भरी एकादशी (आमलकी)	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी	16.03.2011
9.	काशी विश्वनाथ श्रृंगार दिन	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी	16.03.2011
10.	प्रदोष व्रत	फाल्गुन	शुक्ल	द्वादशी	17.03.2011
11.	फाल्गुन पूर्णिमा	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	19.03.2011
12.	श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	19.03.2011
13.	होलिकादाह	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	19.03.2011
14.	होलिकोत्सव (रंगभरी होली)	चैत्र	कृष्ण	प्रतिपदा	20.03.2011
15.	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी	चैत्र	कृष्ण	तृतीया	20.03.2011
16.	श्री शीतलाष्टमी व्रत	चैत्र	कृष्ण	अष्टमी	27.03.2011
17.	पाप मोचनी एकादशी व्रत	चैत्र	कृष्ण	एकादशी	30.03.2011
18.	प्रदोष व्रत	चैत्र	कृष्ण	द्वादशी	31.03.2011

पंचक–दिनाँक 03 मार्च गुरुवार को दिन में 10 बजकर 20 मिनट से प्रारम्भ होकर 08 मार्च मंगलवार को प्रातः 8 बजकर 59 मिनट तक पंचक रहेगा।

मास प्रभाव– इस माह में खाद्य पदार्थो के मूल्य में कमी की प्रवृत्ति रहेगी। सर्राफा बाजार में तेजी बनी रहेगी। गोरस, तथा हरी सब्जियों के मूल्य में उत्तरोत्तर वृद्धि की प्रवृति रहेगी। आलू का संग्रह करना भविष्य के लिये श्रेयस्कर होगा।

कई राज्यों में कहीं–कहीं साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती हैं, तथा वायुवेग के साथ वर्षा होने की संभावनायें हैं।

इन सामाजिक एवं साम्प्रदायिक बुराईयों से बचने या कमी लाने के लिये महर्षि भावातीत ध्यान एवं यज्ञ का आश्रय लेना लाभ प्रद रहेगा।

Veda Series

Shri Surya-Atmaprakashak

Shri Surya Dev is the source of life, light and all energy in cosmos. Any creature individually and all creatures together have no alternate to life giving rays of Surya. He is the most powerful and majestic visible Devata. Surya Dev has also played role of Master-Guru for many Devatas, number of Seers and Devotees. There are large number of kings and rulers around the world, who represent Solar Dynasty.

Shri Surya Sahasranam-1000 names describe 1000 qualities of Bhaskara. Each name of Surya Dev refers to a quality of consciousness. Listening Sahasranam enlivens these qualities of Surya in the consciousness of the listener and at the same time, these qualities are charged in the environment.

Shri Surya Ashtottar Shatnamvali has 108 names of Surya. These names are a few of the most important qualities, which may be chanted while offering water-Argh to Shri Surya. Shri Suryamandalshtakam is a Siddha stotra of Shri Surya and awakens inner light.

As described in phalshruti-benefits of chanting Shri Surya Sahasranam and stotras, Devotees enjoy fullness of energy, brilliance, inner light, perfect health and longevity. Their life shines like golden hue with the grace of Surya. Sunday is the day of Shri Surya. It is recommended to listen Sahasranam and other stotras of Surya Dev on Sunday.

Vedic Arts & Crafts Promotions
A-116, Defence Colony, New Delhi-110 024
• **Phone:** 011-24332207 • **Fax:** 011-24332206
• Website: www.vedic-arts.com • E-mail: vedicarts@mahaemail.com

Veda Series
Village-Chhan, Bhojpur Temple Road, Post-Misrod,
Distt.-Bhopal (M.P.) 462 047 INDIA
Phone: 0755-4087351 • **Fax:** 0755-4087311
Website: www.vedaseries.com • E-mail: edaseries@mahaemail.com

Maharishi Ayurveda

MAHARISHI AYURVEDA FOR SCHOLASTIC PUPILS

School going children are the future pillars of a nation; educational enlightenment is the only path to reach the goal of good life (*HITH AYU.*). The student should be strong enough physically and mentally to hold the reigns of the nation and who knows, some may become good scientists, doctors, engineers, Politicians, Prime Minister and president or Military Generals, Air Marshals etc. to defend the interest of our nation.

To maintain good health, Ayurveda the ancient Indian Medical Science and its principles of health of body and soul are the only answer through purity of mind. This very basic essential factor has been re-discovered, analyzed and standardised by His Holiness Maharishi Mahesh Yogi Ji. The concept is that of Maharishi Ayurveda a rediscovery called science of creative intelligence. The Maharishi put forth the mechanisms of human body and mind to that of receiving balanced and good food and Panch Karma treatment for body and through Transcendental Meditation creative doze of intelligence for mind as the age old *WAG BHATTA* Said in *ASHTANG SANGHRAHA:-*

SHARIRAJANAM DOSHANAM KRAMEN PARADOUSHADHAM. II

BASTI VIREKO VAMANAM TATHA TAILAM GRITAM MADHU. I

DHEE DHAIRYA AATMADI VIGYANAM MANO DOSHOUSHADHAM PARAM. II A.H..Su 1. II

शरीरज्ञानं दोषानां क्रमेण परादौषधम् ।।
वस्ति विरेको वमनं तथा तैलं घृतं मधु।
धी धैर्य आत्मादि विज्ञानं मनोदोषौषधंपरम्।।

अर्ष्टाङ्ग ह्दय सूत्र १

A sound mind is essential for a sound body for maintaining the normalcy of Body Humours, VATA, PITTA & KAPHA. And to clean the intra corporeal depuration the best therapy is enemata, purgation, emesis for flushing out the morbid matter from the body and subsidence of the Doshas by intake of Ghee oil and honey.

Maharishi's Technique for purification of mind

The science of knowledge of The Eternal Self, the Omnipotent through control of mind is the strength of an individual.

For purification and control of Disharmonious mental humours, the RAJO GUNA & TAMO GUNA which cause anxiety, delusion, passion and craving etc., can be achieved through the Ayurvedic knowledge treasure of Vedas and Yoga sutra of Patanjali of Natural Law of creation of universe the Prakriti and its combination of Pure Consciousness'., "The Purusha", Human being has additionally been gifted with the faculty of developed and thinking mind which is the main troubling factor of human body if vitiated by Laxity, lust, greed and craving resulting in mental tension and anxiety particularly so, in younger generation of pupils scholars, some of them, for fear of not completing the assignments of class work, home work and periodical test may lag behind and may not be able to cope with the class room teaching of mathematics, science, grammar, languages and social sciences. It may result in fear of school and class room which may again cause tension increasing day by day. Thus resulting in crowded back benchers, abstention from class lesson and poor performance and failure in the examination

The psychic and temperamental lapses resulting in disinterestedness in studies causes the students to run away from the school which is termed as school dropouts.

ALL THIS UGLY AND DISTASTEFUL HAPPENINGS IN THE LIFE OF FUTURE NATIONAL BUILDERS, THE GREAT MAHARISHI JI STARTED THROUGH HIS GLOBAL PROGRAMME OF VEDIC MEDICINE FOR BODY AND TRANSCENDENTAL MEDITATION FOR MIND.

Meditation Technique

His Holiness Maharishi Ji has stated himself in his discourses that such techniques are Veda gifted which are based on Patanjali Yoga Sutra - YOGASTU CHITTA VRITTI NIRODHA. Type in Sanskrit also By his teaching through PK and TM, Maharishi Ji brought to light properly valuable Principles of Yoga & Ayurveda. It is the Study of Biophysical & Biochemical relationship Between Consciousness and Quantum theory of matter.

After paying obeisance to all the Gurus of the Jagat Guru Shankaracharya line, The Param Guru Brahmanand Saraswati and His Holiness Maharishi Mahesh Yogi Ji, through offerings of holy water, vermilion, flowers and fruits with swasti Vachan, the sadhak should sit just for 20 minutes by squatting in a comfortable “PADMA” posture or any comfortable posture with the eyes closed and should transcend with a Matntra as advised by Maharishi Trained TM Teacher. After practicing Transcendental Meditation one will get a feeling of joy unbounded and relieved from anxiety neurosis. The dawn of age of enlightenment that the meditation technique produces 4th and 5th state of consciousness in the individual a profound influence of orderliness (David Orme Johnson).

Research results on elderly subjects of Bhawateet Dhyan- Transcendental Medtation

(A paper by Benson and Wilson of Canadian University has observed that)

- Respiratory changes consisted of decreased O2 consumption and Co2 elimination.
- No change in respiratory quotient.
- Arterial PH decreased slightly.
- Arterial blood pressure back to normalcy.
- Skin resistance markedly increased.
- EEG fining of brain wave synchrony and coherence between right and left cerebral hemisphere and anterior and posterior regions reported in the a, b and theta wave frequencies.
- Reformation of Criminal mentality in Criminals like violence Robbery drug addiction etc.

Return of mental peace, tranquility &interest in life.

Research Result of TM in High Schools & College Students

(By EB Tone journal of Canadian Medical Association)

1. Decreased anxiety.
2. Improves attention span in educational studies have demonstrated increased intelligence growth rate and learning ability.
3. Superior perceptional motor performance.
4. More logical thinking and improved academic performance in high school and college students.
5. Cognitive style acuity.
6. Positive mental health.
7. Absence of negative thoughts.
8. Good development in personality.
9. Added capacity of oxygen consumption by brain tissue by virtue of PRANAYAMA Practices.

10. Enhanced capacity of verbal and literal expression.
11. Physiological relaxation of mind.
12. Improved efficiency in sports, games and athletics.
13. Regulation in sleeping and awakening time.
14. Improved auditory visual, olfactory, tactile and gustatory capacity.
15. Improved organizational capacity.
16. Clarity in thought, disappearance of hallucination, illusion, delusion, and errors of perception.
17. And reformation of negative mentality like falsehood, thieving, copying in exam, proxy etc.
18. Fulfillment of education, Realization and awareness of responsibilities.

The above observations are the outcome of researches in 35 countries all over the globe.

T.M. optimizes brain function and frees one from anxiety neurosis, fear complex and develops self confidence particularly in students.

Maharishi Ayurveda advocates somatic cleansing by intra corporeal Ayurveda methods of Panch Karma, cleansing the flushes out all the morbid toxic matter from the body through oral, rectal and nasal route. Nasal infiltration of herbal medication energizes the respiratory tract and stimulates the nerves and brain system to sharpen the reception capacity towards class room lectures and learning. This Vedic Therapy is the outcome of experimentation done on human subject for thousands of year.

External oil massage and sudation therapy makes the skin glow and the face gets the brilliance with dazzling lustrous touch.

The PK cleansing is followed by RASAYANA the toning up therapy with divine tonic like Chyavan Prasha which allows the children's growth in height and health very well.

Rasayana gives:

1. Longevity of life (Dirgham Ayu)
2. Improvement of memory (Smriti Medham)
3. Healthy life (Arogayam) Through improved Defence mechanism of the body from disease factors
4. Ever youthfulness (Tarunam Vayah)
5. Glamorous face (Prabha)
6. Fairness in complexion (varna)
7. Sweetness of voice (Swarodaryam)
8. Strengthening of body (Dehabalam)
9. Sensitivity of senses (Indriya Balapradam)
10. The perfection of voice &utterances (Vaksiddhi)
11. Glowing face (Pranati Kantim)

The young school and college going folks, for their good academic performance and knowledge are better advised to follow health regimen of Maharishi Ayurveda and T.M. Practices for their bright future and be one with the age of enlightenment.

Ayurved Bhushan
Viayda (DR.) T. SRINIVAS RAO
M.S.A.M (Jamnagar)
VISITING PROFESSOR, & CONSULTANT,
MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA, MP
MAHRISHI VEDIC UNIVERSITY, THE NETHERLANDS

CELEBRATIONS

महर्षि विद्या मन्दिर अलीगढ़ (मुख्य शाखा)

ज्ञान युग दिवस

महर्षि विद्या मंदिर (मुख्य) आगरा रोड़, अलीगढ़ में परम् पूज्यनीय ब्रह्मलीन महर्षि महेश योगी जी का जन्मदिवस 'ज्ञान युग दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय के प्राचार्य श्री अनिल शर्मा जी ने गुरुदेव के समक्ष दीप प्रज्वलित कर परम् पूज्यनीय गुरुदेव को माल्यापर्ण कर किया। इसके पश्चात् महर्षि विद्या मन्दिर परिवार के सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा अन्य कर्मचारियों ने गुरूदेव का पूजन कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। तत्पश्चात सभी ने भावातीत ध्यान एवं सिद्धि का अभ्यास किया तथा सम्पूर्ण विश्व में परम् पूज्यनीय महर्षि जी द्वारा प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान के प्रचार–प्रसार हेतु किये गये महान कार्यों को स्मरण किया।

विज्ञान प्रदर्शनी

महर्षि विद्या मंदिर (मुख्य) आगरा रोड़, अलीगढ़ में 29 जनवरी को विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस 'विज्ञान प्रदर्शनी' में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के सभी छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी में 80 प्रोजेक्ट व मॉडल प्रस्तुत किये गये। इसमें सीनियर वर्ग में नीलिशा को ''बेस्ट यूटिलाइजेशन ऑफ वाटर, रेन वाटर हार्वेस्टिंग एण्ड इम्बेलेंस ऑफ एनवायरमेन्ट'' के लिये प्रथम, खुशबू दीक्षित, आरती सिंह, दीपांशु को ''पॉल्यूशन'' पर आधारित मॉडल के लिये द्वितीय, और उदय राठी, शिवम अपूर्व, चेतना वार्ष्णेय को ''एंपलीफायर'' पर आधारित प्रोजेक्ट के लिये तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन एस. वी. कालेज के वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर के विपिन चंद्र वार्ष्णेय व डी. एस. कालेज के रसायन विज्ञान के प्रोफेसर के. के. श्रीवास्तव ने किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनिल शर्मा जी ने मुख्य अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

२६ जनवरी गणतंत्र दिवस

महर्षि विद्या मंदिर (मुख्य) आगरा रोड़, अलीगढ़ में '26 जनवरी गणतंत्र दिवस' बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजा रोहण से किया गया। तत्पश्चात सभी महर्षि परिवार के सदस्यों ने श्रद्धा के साथ गुरुदेव का पूजन किया। पूजन के बाद छात्रों ने अपने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों से उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोह लिया। इसके पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनिल शर्मा जी ने सभी मेधावी छात्र–छात्राओं को मेडल व प्रमाण पत्र वितरित कर उन्हें निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिये बधाई दी।

विज्ञान प्रतियोगिता

आई. टी. एम. में दैनिक जागरण की विज्ञान प्रतियोगिता में महर्षि विद्या मन्दिर के छात्र देवेश कुमार, गौरव शर्मा और आशिष पाठक ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

महर्षि विद्या मन्दिर के कक्षा सात के छात्र शुभम माहेश्वरी ने जी टी.वी. में डांस इंडिया डांस में धूम मचाकर 14 फरवरी को कलर्स चैनल के चक ६ ूम–धूम कार्यक्रम में अपने डांस से समस्त भारतीय युवाओं का मन मोह लिया।

एनसीसी कैडटों और अधिकारियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम –

एन. सी. सी. निदेशालय में हुये एनसीसी कैडटों और अधिकारियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. रमन सिंह माननीय मुख्यमन्त्री, छत्तीसगढ़ ने कहा कि राष्ट्र के निर्माण में एनसीसी कैडटों की महत्तवपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अच्छा प्रदर्शन करने वाले कैड्ेटस को प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर उपस्थित एनसीसी छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश के उपमहानिदेशक ब्रिगेडियर वी. के. अड़प्पा और कर्नल बी. पी. शाही मुख्य रूप से उपस्थित रहे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि एनसीसी एक ऐसा संगठन है जिससे छात्रों में देश भक्ति का जब्जा मिलता है। उन्होंने एनसीसी कैड्ेटस के अनुशासन की भी तारीफ की। इस समारोह में महर्षि विद्या मन्दिर रायपुर की एनसीसी अधिकारी कुमारी रीना वर्मा एवं एनसीसी कैड्ेटस को सम्मानित किया गया।

माननीय महामहिम राज्यपाल श्री शेखर दत्त के साथ महर्षि विद्या मन्दिर स्कूल रायपुर की एनसीसी अधिकारी कुमारी रीना वर्मा एवं एनसीसी कैड्ेटस

माननीय मुख्यमन्त्री डॉ. रमन सिंह के साथ महर्षि विद्या मन्दिर स्कूल रायपुर की एनसीसी अधिकारी कुमारी रीना वर्मा एनसीसी अधिकारी एवं एनसीसी कैड्ेटस

एन. सी. सी. निदेशालय में हुये एनसीसी कैडटों और अधिकारियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में जनसमूह को सम्बोधित करती हुई महर्षि विद्या मन्दिर स्कूल की एनसीसी अधिकारी कुमारी रीना वर्मा

एनसीसी कैडटों और अधिकारियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह

Gyan Yug Divas Celebration
Maharishi Vidya Mandir Guwahati-Shilpukhuri

Gyan Yug Divas was celebrated on 12th January 2011 with various colourful cultural programmes performed by the students. The Chief Guest of the occasion was the renowned writer Sri Gagan Chandra Adhikari and other dignitaries were Sri R. K. Hariharan, Smt. Karabi Hariharan, Dr. Manoj Choudhury, Sri T. P. Bhattacharjee, Regional Director, Guwahati Region, Maharishi Vidya Mandir Schools Group.

Mrs. Monika Goswami, Principal MVM-I Shilpukhuri addressing on the occasion of Gyan Yug Divas Celebration.

Students of MVM-I Guwahati presenting group song on the occasion of Gyan Yug Diwas Celebration.

Students of MVM-I Guwahati presenting "Folk" dance on the occasion of Gyan Yug Divas Celebration.

Students of MVM-I Guwahati presenting group song on the occasion of Gyan Yug Diwas Celebration.

ANNUAL DAY CELEBRATION

MAHARISHI VIDYA MANDIR CHICKMAGALUR, KARNATAKA

Dr. C. K. Subboraya, Principal AIT College, Chickmagalur, Dr. J. P. Krishna Gowda, Philanthropist & Pediatrician lighting the lamp of the occasion of Annual Day celebration of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur

Chief Guest addressing on the occasion of Annual Day Celebration of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur

Students of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur presenting "Koli Ghana" dance on the occasion of Annual Day Celebration

Students of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur presenting "Onam" dance on the occasion of Annual Day Celebration

Students of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur presenting "Bharathnatyam" dance on the occasion of Annual Day Celebration

Students of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur presenting group song on the occasion of Annual Day Celebration

PHOTO FEATURES

Audience witnessing cultural Programme on the occasion of Annual Day Celebration

Students of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalure participating in Inter School Competition organised by Cultural Deptt. Govt. of Karnataka

School Band of Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur

Students of MVM Chickmagalur participated in Fancy Dress Competition organised by Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur on 5 January 2011

Students of MVM Chickmagalur participating in Fancy Dress Competition organised by Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur

Students participating in Drawing Competition organaised by Maharishi Vidya Mandir Chickmagalur

E-Gyan Monthly News Letter

Reminder

Happy Holi

Dear Readers,

I am happy to release this 21th edition of E-Gyan Monthly Digital News Letter. Previous editions of E-Gyan have been published and circulated amongst you. In every edition of E-Gyan I am requesting you to send news from your relevant field. But we are not receiving enough news. Please start sending the news in either Hindi or English. **E-Gyan Monthly News Letter** will be released in the first week of every calendar month. E-Gyan matter must be received by 15th of every month. Now E-Gyan is also reaching to large number of global leaders of Maharishi Organisation world wide. If Rajas, Raj Rajeshwaries, Ministers and National Directors want to share any inspiring news of their country, please send in English.

E-Gyan Monthly Digital News Letter will be circulated to all members, employees, well wishers and students of all Maharishi Organizations in India and also to large number of Meditators, Sidhas, Governors, leaders and devotees of Maharishi Global Organisation..

E-Gyan Monthly News Letter contains the following:

1. Courses currently run by Maharishi schools/colleges/institutions and universities.
2. Information on any new course/programme added in Maharishi schools/colleges/institutions and universities.
3. Present student strength course wise, subject wise, class wise, branch wise in different Maharishi Educational Institutions.
4. Announcement of any new course offering and its schedule with course details and venue.
5. Starting of new building construction, report on Bhumi pujan or vastu pujan or foundation stone ceremony.
6. Inauguration or graha pravesh or public offering of new building.
7. Special achievement of any Maharishi Organisation.
8. Special achievement of Staff or faculty of any Maharishi Educational Institution.
9. Special achievements or award received by Students in the field of academics, sports, arts, music, culture, language, general knowledge, quiz, talent search or any other competition on district, state, national and international level.
10. Report on NCC, NSS, Scouts, Adventure programme/trip.
11. High-level placement of graduates in national, international or multinational organisations/ corporations.
12. Outstanding performance of ex-students.
13. Publication of any paper by Faculty, Students, Staff, research department or Organisation.
14. News coverage in local, state, national level newspapers, TV, radio, website.
15. Selection of students in civil services, IIM, IIT, PMT, IIT, NDA, IMA, IFS, IRS, Armed Force or in any other institution of national importance.
16. List of outstanding government or private special projects taken by the organisation.
17. Launching of new product with details, availability, and price.
18. Details of products already in market.

19. Creative writings on different topics, such as cultural/social and historical issues.
20. Offering Vedic solution to any social problem.
21. Performance of any special Anushthan or Yagyas.
22. Vedic celebration reports.
23. Excursion tour reports.
24. Corporate visit, corporate training etc.
25. Visit of national and international dignitaries and their remarks.
26. Appreciation, recognition or awards received by Maharishi Organisations.
27. Report on academic or commercial collaborations.
28. Report on Maharishi Vedic Organic Agriculture.
29. Report on monthly Initiations in TM, Sidhi course and Advance Techniques.
30. Report on activities of Maharishi Global Movement.
31. Report on any other similar subject or area, which is not covered here but worth reporting.

We invite news, articles and reports from all Maharishi Organisations, leaders, members, faculty, staff, students, meditators, Sidhas and all readers. Please note that all news reports must be authentic, original, true and correct. The writers of articles should send a note that the article is their original article.

Please also note that all contents should be sent in soft copy through email **(egyan@mahaemail.com and egyanmonthly@gmail.com)** as word document file (or in a CD to Dr. T. C. Pathak, Maharishi Centre for Educational Excellence Campus, Building No-5, Lambakheda, Berasia Road, Bhopal, Madhya Pradesh, PIN 462018). Hard copy should be neatly typed ("Times New Roman" font for English and "Devnagri" or "Chanakya" font for Hindi) and should be sent to above-mentioned address. High quality/resolution pictures and graphics will be very useful to make your report better looking and will be much interesting for readers.

Editorial Board of E-Gyan Monthly News Letter will not be responsible for any copyright issues of reports. Once a matter of false reporting comes to the Board, E-Gyan Monthly Newsletter will never publish reports of the sender in future and will inform it's readers about this.

Please recommend all your friends and relatives to subscribe E-Gyan Monthly Digital News Letter and to visit www.e-gyan.net web site.

With All the Best Wishes in Maharishi's Forth Year of Invincibility - Global Ram Raj.

Jai Guru Dev, Jai Maharishi

Dr. T.C. Pathak
For Editorial Board, E-Gyan Newsletter

Copyright © 2010 by Maharishi Ved Vigyan Prakashan
All rights reserved. No part of E-Gyan Monthly Digital News Letter may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including Photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of Maharishi Ved Vigyan Prakashan.
Maharishi Ved Vigyan Prakashan, Chhan, Bhojpur Temple Road, Post - Misrod, Bhopal, Madhya Pradesh, Phone: +91 755 4087351